विज्ञप्ति

एक प्रति ८/- रुपये
वार्षिक २५०/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष १६ : अंक ७ : नई दिल्ली : २३-२९ मई २०१०

युगप्रधान आचार्यश्री महाप्रज्ञ की स्मृति में आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा रचित गीत

पूज्यवर महाप्रज्ञ भगवान
तव चरणों में सतत समर्पित श्रद्धामय सम्मान ॥

कितनों पर उपकार तुम्हारा,
भक्तों की आंखों का तारा,
सहृदयता की अविरल धारा,
दुःखित जगवत्सल विभुवर तुम करुणारत्ननिधान ॥

मृदु समुचित पथदर्शन करते,
आगन्तुक की पीड़ा हरते,
शोकाकुल में सम्बल भरते,
धरते हस्तकमल शिष्यों पर देते विद्या दान ॥

चिन्तन में चातुर्य खरा था,
वाणी में माधुर्य धरा था,
प्रवचन में गाम्भीर्य भरा था,
कैसेटों में रखा सुरक्षित सुन सकते मतिमान ॥

आर्हतवाङ्मय अनुसन्धायक,
सम्पादक अनुवादक वाचक,
तुलनात्मक टिप्पण व्याख्यायक,
जिन शासन की शान प्रभावक आगम-अनुसन्धान ॥

जैन योग के पुनरुद्धारक,
प्रेक्षाध्यान विधा सन्धारक
मैत्री नैतिक मूल्य प्रखारक,
शिक्षण संस्थानों में प्रचलित वर जीवन विज्ञान ॥
किया अहिंसा यात्रा द्वारा जन-जन का कल्याण ॥

कालू गुरुवर के व्याख्याता,
तुलसी प्रभु से गहरा नाता,
महाश्रमण के तुम हो त्राता,
शास्ता श्री भैक्षव शासन के गाएं गौरव गान ॥

नब्बे वर्षों का शुभ जीवन,
वत्सलता का शोभन उपवन,
'महाश्रमण' पावन संजीवन,
दीक्षा भू सरदारशहर में किया महाप्रस्थान ॥

लय : निहारा तुमको कितनी बार...

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाप्रज्ञ की स्मृति सभा

११ मई। आज परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में आचार्यश्री महाप्रज्ञ की स्मृति सभा का उपक्रम। आचार्यवर के महामंत्रोच्चार के पश्चात समणीवृन्द द्वारा 'महाप्रज्ञ अष्टकम' का संगान। आज की इस स्मृति सभा में श्री प्रतापजी दूगड़, स्थानीय महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती सूरज बरड़िया, पूज्य गुरुदेव की संसारपक्षीया दौहित्री श्रीमती सुषमा मणोत, मुम्बई सभा के अध्यक्ष श्री भंवरलालजी कर्णावट, अ.भा. तेयुप के अध्यक्ष श्री गौतम डागा, महिला मंडल की अ.भा. अध्यक्ष श्रीमती कनक बरमेचा, श्री एस. रघुनाथन, तेरापंथ विकास परिषद के संयाजेक श्री लालचन्द सिंघी, स्थानीय सभा के अध्यक्ष श्री अशोकजी नाहटा, चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री सुमतिजी गोठी, अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलालजी, मुनि रजनीशकुमारजी ने श्रद्धेय आचार्यश्री महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विभिन्न पहलुओं का स्पर्श करते हुए अपनी श्रद्धांजलि समर्पित की। छह दशक तक आचार्यवर के निकट सहयोगी रहे आगम मनीषी मुनि दुलहराजजी ने अपने हृदयस्पर्शी उद्‌गार व्यक्त किए।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा 'ऐसा लगता है हम सबकी श्रद्धा-भक्ति आचार्य महाप्रज्ञ को बांध नहीं पाई। बाल साधुओं की चपलता भी उन्हें रोक नहीं सकी। प्रश्न है ऐसा क्यों? आचार्य महाप्रज्ञ को एकमात्र आचार्य तुलसी प्रिय थे। उनके मुख पर सदा आचार्य तुलसी का नाम रहता था और एक वाक्य में कहें तो उनका सारा जीवन ही तुलसीमय था। उनके रोम-रोम में तुलसी बसे थे। आचार्यश्री कभी-कभी फरमाते मृत्यु हो तो गुरुदेवश्री तुलसी जैसी। उन्होंने उस महाप्रभु के पथ का ही अनुगमन किया। अन्तिम क्षण तक गुरुदेव तुलसी के साथ अद्वैत को बनाए रखा। पूज्य आचार्यप्रवर! अब आप हमें वह शक्ति और ज्ञान दें, जिससे हम धर्मसंघ की सेवा करते हुए मनसा, वाचा, कर्मणा और आपके आदेशों का पालन कर सकें।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी ने अपने अभिभाषण में कहा 'हमने अपने जीवन में आचार्य तुलसी युग, तुलसी-महाप्रज्ञ युग, महाप्रज्ञ-महाश्रमण युग देखा। आचार्य महाप्रज्ञ आचार्य तुलसी और युवाचार्य महाश्रमण दोनों के साथ जुड़े रहे। उस महापुरुष का कद और व्यक्तित्व दिनोदिन ऊंचा उठता गया। उन्होंने दुनिया की पीर को पहचाना। वे अपने जीवन में बहुत कुछ करना चाहते थे। बहुत कुछ किया भी, किन्तु बहुत कुछ अनकिया भी रह गया। अब उन कार्यों को आचार्यश्री महाश्रमण पूरा करेंगे।

आचार्य महाप्रज्ञ का चिंतन और दर्शन उत्तरोत्तर इतना विशद होता गया कि वे सभी लोगों की आशा के केन्द्र बन गए। उनके जैसा गंभीर चिंतक व दार्शनिक संत दुर्लभ है। आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ ने साध्वी समाज और समणश्रेणी के बारे में बहुत कुछ सोचा, बहुत कुछ किया। साध्वी समाज को वे जिस

ऊंचाई पर ले जाना चाहते थे, उसके लिए हमें संकल्पित होना है।'

महाश्रमणीजी ने कहा 'आचार्यप्रवर! पूरा संघ आपके साथ है। आप जहां भी ले जाएंगे, हम सब वहां चलने के लिए तैयार हैं।'

परमाराध्य आचार्यश्री महाश्रमण ने संघ के नाम अपने प्रथम प्रवचन में कहा 'एक रिक्तता हो गई। पूज्य गुरुदेव जब प्रवचन देने के लिए पधारते, मैं उन्हें हाथ का सहारा देता और उन्हें मंच तक ले जाता। प्रवचन के बाद फिर उन्हें हस्तावलंब देकर कक्ष तक ले जाता। अब मैं किसे सहारा दूं, किसे पहुंचाऊं? यह रिक्तता क्यों हुई? वे हम सबको छोड़कर क्यों चले गए? चिंतन करने पर स्थूल रूप में दो विकल्प हो सकते हैं। क्या वे हमसे रूठ गए या हमसे कोई अविनय हो गया, जिससे नाराज होकर वे चले गए? या फिर हमसे कुछ ज्यादा ही संतुष्ट हो गए कि महाश्रमण अब पूरा काम देखने लग गया है, वह सब संभाल लेगा। उत्तर तो गुरुदेव ही दे सकते हैं, किन्तु वह मिले कैसे?

यह दुनिया का नियम है। मृत्यु के लिए कोई निर्धारित या खास समय नहीं होता। वह बचपन, यौवन या वृद्धावस्था में कभी भी, किसी भी समय हो सकती है। महापुरुष तो इस दुनिया में कभी-कभी आते हैं। आचार्य महाप्रज्ञ ऐसे महापुरुष थे, जिन्हें प्रकृति ने मानवता की सेवा, जैन शासन व धर्म शासन की सेवा के लिए भेजा था।'

आचार्यप्रवर ने गुरुदेव के साथ कुछ दिन पूर्व हुई वार्ता का उल्लेख करते हुए कहा 'एक दिन गुरुदेव ने कहा **'मैंने सरदारशहर जाने का निर्णय महाश्रमण के लिए ही किया है। मेरी यह भावना है कि महाश्रमण का पहला चौमासा सरदारशहर में हो।'**

पूज्यवर की इस बात से मुझे आश्चर्य हुआ। गुरुदेव इस बात को जानते थे कि मैं पहले भी यहां चातुर्मास कर चुका हूं, फिर उन्होंने मेरे पहले चातुर्मास की बात क्यों कही? यह **'पहला'** शब्द मुझे उद्वेलित कर गया। ऐसा लगता है कि सरदारशहर का कोई योग था कि जहां उन्होंने अपनी साधना प्रारंभ की, वहीं समापन भी कर दिया।'

आचार्यवर ने इस अवसर पर मेवाड़ में हुई अस्वस्थता, उसके कारण हुए यात्रा-परिवर्तन और उसके बाद स्वास्थ्य में आए उतार-चढ़ाओं का विस्तार से वर्णन किया। साप्ताहिक अनुष्ठान की घोषणा करते हुए आचार्यप्रवर ने कहा 'आज से पूरे देश में एक सप्ताह तक आध्यात्मिक अनुष्ठान चलेगा, जिसमें **'ॐ महाप्रज्ञ गुरुवे नमः'** का जप किया जाए। एक सप्ताह तक आमोद-प्रमोद के कोई भी कार्यक्रम न हों।'

१२ मई। स्मृति सभा का दूसरा दिन। कार्यक्रम का प्रारंभ समणीवृन्द द्वारा प्रस्तुत महाप्रज्ञ अष्टकम के मंगल संगान से हुआ। आजकी स्मृति सभा में मुनि योगेशकुमारजी, मुनि मृदुकुमारजी, जितेन्द्रकुमारजी, मुनि सुमेरमलजी 'सुदर्शन', मुनि किशनलालजी, प्रो. मुनि महेन्द्रकुमारजी, साध्वी पीयूषप्रभाजी, जिनप्रभाजी, समणी नियोजिका मधुरप्रज्ञाजी, समणी मंगलप्रज्ञाजी, समणी प्रतिभाप्रज्ञाजी, जैविभाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चोरड़िया, महासभा के अध्यक्ष श्री चैनरूपजी चिंडालिया आदि ने आचार्य महाप्रज्ञ के प्रति अपनी भावांजलि समर्पित की। इस अवसर पर विशिष्ट लोगों से प्राप्त स्मृति सन्देशों का वाचन भी किया गया।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण ने अपने मंगल प्रवचन में कहा 'भगवान ने समता को धर्म कहा है। समता का उपदेश देना आसान है, किन्तु समता को जीवन में उतारना बहुत कठिन है। हमारे धर्मसंघ के सामने और जैन समाज के सामने एक कठिन स्थिति उत्पन्न हुई। तेरापंथ धर्मसंघ में एक आचार्य की परंपरा चलती है। दिन-रात गुरु की निकट उपासना में रहने वालों के सिर से जब गुरु का साया उठता है तो एक बार स्थिति विषम हो जाती है। वैसी ही स्थिति हमारे सामने आई। ऐसा लगा जैसे भरी दोपहरी में खुले आसमान के नीचे बिना छत के हो गए। भगवान महावीर का निर्वाण होने पर गणधर गौतम भी विचलित हो गए थे।'

आचार्यवर ने आगे कहा 'गुरु और शिष्य का संबंध विशिष्ट और आत्मीय होता है। विरह की स्थिति मन को दुःखित करती है, किन्तु हम तो साधक हैं। हमने विमोह का पथ स्वीकार किया है। मोह से मुक्ति

की साधना करने वाला साधक समता की भूमिका पर आरूढ़ हो सकता है। जितनी ही समता की साधना होगी, वीतरागता उतनी ही बढ़ती जाएगी।'

आचार्यप्रवर ने आगे कहा 'हम पूज्य गुरुदेव के अभीप्सित और अवशेष कार्यों को पूरा करने का प्रयत्न करें, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। भगवती सूत्र, आगम संपादन, तुलसी यशोविलास आदि अनेक कार्यों को पूरा करके अपनी मनोव्यथा को कम करने का प्रयास करें। अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक रहें, चित्त समाधि बनी रहे तथा समता की साधना अधिकाधिक पुष्ट बने, यही काम्य है।'

१३ मई। स्मृति सभा का तीसरा दिन। समणीवृन्द के मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम का प्रारंभ। मुनि चैतन्यकुमारजी, मुनि अभिजितकुमारजी, मुनि राजेन्द्रकुमारजी, मलयजकुमारजी, साध्वी उज्ज्वलरेखाजी, गुप्तिप्रभाजी, मुदितयशाजी, संगीतप्रभाजी, समणी रोहिणीप्रज्ञाजी, शासनसेवी श्री कन्हैयालालजी छाजेड़, विधायक श्री अशोक पींचा, श्री मिलापजी दूगड़, श्री गिरधारी पारीक, श्री मूलचन्दजी बोथरा आदि अनेक वक्ताओं ने आचार्यवर के अवदानों की स्मृति करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभाजी द्वारा रचित गीत को साध्वीवृन्द ने सामूहिक स्वरों में प्रस्तुत किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने घोषणा करते हुए कहा 'इस बार मैं अपने जन्मदिवस के संदर्भ में किसी प्रकार का कोई आयोजन-उपक्रम करना नहीं चाहता। मैं चाहता हूं कि उस दिन पूज्य गुरुदेव के समाधि स्थल पर जाऊं और वे वहीं से अपना आशीर्वाद प्रदान करें।'

दूसरी घोषणा करते हुए आचार्यप्रवर ने कहा 'वैशाख शुक्ला दशमी (२३ मई) को मैं विधिवत आचार्य पद का दायित्व ग्रहण करना चाहता हूं और यह कार्यक्रम गांधी विद्या मन्दिर में आयोजित किया जाएगा।'

१४ मई। स्मृति सभा का चौथा दिन। समणीवृन्द द्वारा महाप्रज्ञ अष्टकम के मंगल संगान से कार्यक्रम का शुभारंभ। बाल मुनि हेमन्तकुमारजी, मुनि जयंतकुमारजी, गौतमकुमारजी, अनुशासनकुमारजी, गौरवकुमारजी, हितेन्द्रकुमारजी, सुधांशुकुमारजी, लब्धिकुमारजी, मुनि मोहनलालजी 'शार्दूल', साध्वी सुषमाकुमारीजी, श्रुतयशाजी, कमलयशाजी, समणी चारित्रप्रज्ञाजी, डॉ. मुन्नालालजी सेठिया, श्री भीखमचन्दजी नखत, श्री राजेन्द्र सेठिया, श्री बाबूलालजी दूगड़ आदि अनेक वक्ताओं ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ के प्रति अपनी भावांजलि अर्पित की। बाल मुनियों ने अपने भावपूर्ण गीत से सबको भावविभोर कर दिया। युवा संतों ने, साध्वीवृन्द ने तथा समणीवृन्द ने अपने समूह गीतों को प्रस्तुति दी।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा 'पूज्य गुरुदेव मुझे कोई अन्तिम सीख दिए बिना ही इस दुनिया से चले गए। ऐसा ही गुरुदेवश्री तुलसी ने किया था। उन्होंने भी आचार्य महाप्रज्ञजी को किसी प्रकार की अन्तिम सीख नहीं दी। दोनों पूज्यप्रवर अकस्मात् गए। इस आधार पर मैं कह सकता हूं कि किसी भी पिता को इस भरोसे में नहीं रहना चाहिए कि अन्तिम समय में मैं अपने बच्चों को सीख दूंगा। गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ के महाप्रयाणों में मुझे तीन बातों की समानता दिखाई देती है

१. दोनों आचार्यों ने अपने अन्तिम चातुर्मास जैनविश्वभारती, लाडनूं में किए। आगामी चातुर्मास करने के लिए आचार्य तुलसी ने गंगाशहर में प्रवेश किया और आचार्य महाप्रज्ञ ने सरदारशहर में।
२. दोनों के स्वर्गवास का समय भी करीब-करीब समान था।
३. दोनों ही गुरुदेव अपने-अपने उत्तराधिकारी के जन्मदिवस के चन्द दिनों पूर्व ही महाप्रयाण कर गए।

अपनी बात को आगे बढ़ाते हुए आचार्यप्रवर ने कहा 'मुझे दोनों महापुरुषों के पावन सान्निध्य में सक्रिय बनकर काम करने का अवसर मिला। गुरुदेवश्री तुलसी ने मुझे थोड़ा-थोड़ा आगे बढ़ाना प्रारंभ कर दिया, फिर आचार्य महाप्रज्ञ ने मुझे और आगे बढ़ाया तथा गहराई में ले गए। आचार्यश्री ने अन्त समय में मुझे कोई सीख भले ही न दी हो, किन्तु इन वर्षों में बहुधा मुझसे विचार-विमर्श करते रहते। मैंने आचार्यप्रवर के जीवन पर किताब लिखी तो बहुत सोच-विचार कर उसका शीर्षक दिया **'महात्मा महाप्रज्ञ'**। महात्मा होना बहुत बड़ी बात है। वे एक महान आत्मा थे। कई बार व्यक्ति का मूल्यांकन उसके जीवनकाल में नहीं होता,

दुनिया से जाने के बाद होता है। अध्यात्म और साहित्य जगत में आचार्यवर का मूल्यांकन हुआ, आगे और ज्यादा होगा। ऐसे आत्मीय संबंध रखने वाले व्यक्ति के चले जाने से खालीपन आना स्वाभाविक है। हम चिंतन और तदनुरूप प्रयासों से उस खालीपन को भर सकते हैं। हम आचार्यप्रवर द्वारा छोड़े गए कार्यों का आकलन करें। उनके स्थूल शरीर का हम दर्शन नहीं कर सकते, किन्तु यशःशरीर का अन्तर्मन से विश्लेषण करें तो कुछ प्रेरणा जरूर मिलेगी।'

१५ मई। परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाप्रज्ञ के साप्ताहिक स्मृति अनुष्ठान का अन्तिम दिन। परमाराध्य आचार्यश्री महाश्रमण की पावन सन्निधि। महाप्रज्ञ अष्टकम के संगान से कार्यक्रम का प्रारंभ। मुमुक्षु ललिता, मुनि पानमलजी, मुनि अक्षयप्रकाशजी, मुनि कुमारश्रमणजी, साध्वी तन्मयप्रभाजी, समणी भावितप्रज्ञाजी, सन्मतिप्रज्ञाजी, श्री सूरजमलजी गोठी, डॉ. तारा दूगड़ और श्रीमती सुनीता सेठिया ने अपने भावपूर्ण उद्‌गार व्यक्त किए। समणीवृन्द, साध्वी शुभ्रयशाजी आदि साध्वियों तथा मुनि कीर्तिकुमारजी एवं महावीरकुमारजी ने भावपूर्ण गीत का संगान किया। अठारह वर्षों से आचार्यवर की सेवा में रत मुनि जयकुमारजी ने आचार्यवर की सेवा में बीते क्षणों को अपना सौभाग्य बताया। बत्तीस वर्षों से आचार्य महाप्रज्ञ की सेवा, साहित्य, संपादन आदि कार्यों में समर्पित मुनि धनंजयकुमारजी ने एक भावपूर्ण कविता 'महाप्रज्ञ आज भी जीवित हैं' के साथ अपनी भावाभिव्यक्ति दी। श्री मूलचन्दजी बोथरा (बीकानेर) के पौत्र संजय बोथरा आदि बच्चों ने भावपूर्ण गीत का संगान किया।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा 'जो ऋषि होते हैं, वे महान प्रसन्ता वाले होते हैं, परम पूज्य आचार्यवर के जीवन में यह सूक्त चरितार्थ होता है। उनके व्यवहार में कितनी प्रसन्नता, वत्सलता, करुणा और ममता देखने को मिलती थी। स्थूल शरीर कुछ काल तक रहता है, किन्तु यशःशरीर चिरकाल तक रहता है। हम यशःशरीर को स्मृति के आधार पर आलोकित कर सकते हैं।

आचार्यवर ने आगे कहा 'एक सप्ताह से हम उस महामानव को याद कर रहे हैं। यह क्रम एक महीने तक चले, ऐसा मेरा चिंतन है। एक महीने तक निरंतर कुछ तप का भी यथाशक्ति प्रयास करें। एक वर्ष तक मासिक कृष्णा एकादशी को भी पूरा धर्मसंघ स्मृति सभा के रूप में मनाए।

गुरुदेव अपने जीवन में योजना बनाते रहते थे। नौवें दशक में भी उनकी जीवनशैली बहुत व्यवस्थित थी। अन्तिम समय में मैं क्षमायाचना भी नहीं कर पाया। उन्होंने कितना वात्सल्य दिया। जीवनभर पूरी जागरूकता से काम किया। दीक्षा जीवन का प्रथम श्वास भी सरदारशहर में लिया और अन्तिम श्वास भी सरदारशहर में ही लिया। उस महामानव के प्रति हम सब प्रणत हैं। संघ की उन्होंने कितनी सेवा की और कितनों ने उनकी सेवा की। ऐसे महामानव की सेवा करना सौभाग्य की बात है। वे हमें बहुत कुछ कह कर गए हैं, बहुत कुछ देकर गए हैं। वे सदेह हमारे सामने नहीं हैं, किन्तु हम उनके कार्यों को, प्रयासों को आगे बढ़ाते रहें, यही हमारी कामना है।

इस अवसर पर परमाराध्य आचार्यश्री महाश्रमण ने स्वरचित स्मृति गीत का सस्वर व्याख्या सहित संगान किया। वह गीत इसी विज्ञप्ति के मुखपृष्ठ पर प्रकाशित है।

साप्ताहिक स्मृति अनुष्ठान कार्यक्रम का कुशल संयोजन मुनि मोहजीतकुमारजी ने किया।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ : जीवन के कुछ उल्लेखनीय तथ्य

- परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाप्रज्ञ का जन्म टमकोर ग्राम में आसाढ़ कृष्णा १३, वि.सं. १९७७ (१४ जून १९२०) को हुआ।
- आचार्यवर ने साढ़े दस वर्ष की अवस्था में अपनी मां साध्वी बालूजी के साथ माघ शुक्ला १०, वि.सं. १९८७ में पूज्य कालूगणी के करकमलों से सरदारशहर में भंसालीजी के बाग में दीक्षा स्वीकार की। उसी दिन पूज्य कालूगणी ने आपके निर्माण का दायित्व मुनि तुलसी को सौंप दिया।

- आपने स्वल्प समय में संस्कृत, प्राकृत, व्याकरण, दर्शन, न्याय, काव्य आदि का गंभीर अध्ययन कर लिया। आपकी गणना मेधावी मुनियों की पंक्ति में होने लगी।
- आप आचार्य तुलसी के अनन्यतम कृपापात्र शिष्य थे। आपने आचार्य भिक्षु और आचार्य तुलसी के भाष्यकार के रूप में ख्याति प्राप्त की।
- आचार्य तुलसी ने वि.सं. २००१ में आपको अग्रणी, वि.सं. २००४ में साहाय्यपति और सं. २०२२ में निकाय सचिव बनाकर आपकी अर्हताओं का मूल्यांकन किया।
- आचार्य तुलसी ने वि.सं. २०३५, माघ शुक्ला सप्तमी को राजलदेसर में अपना उत्तराधिकारी मनोनीत कर तेरापंथ धर्मसंघ के युवाचार्य के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया।
- वि.सं. २०५०, माघ शुक्ला सप्तमी को सुजानगढ़ में आचार्य तुलसी ने आचार्य पद का विसर्जन कर महाप्रज्ञ को आचार्य पद का दायित्व संभालने का निर्देश दिया।
- आचार्य तुलसी ने अपने जीवनकाल में आचार्य पद का विसर्जन कर ८ फरवरी १९९५ को आचार्य महाप्रज्ञ का आचार्य पदाभिषेक कर एक विलक्षण इतिहास रचा।
- यह भी एक संयोग है कि आचार्य महाप्रज्ञ के १६ युवाचार्य मनोनयन दिवस तथा १६ आचार्य पदाभिषेक दिवस मनाए गए। उनका १६वां युवाचार्य मनोनयन दिवस सुजानगढ़ में और १६वां आचार्य पदाभिषेक दिवस श्रीडूंगरगढ़ में मनाया गया।
- आचार्य महाप्रज्ञ ने १० वर्ष गृहस्थ जीवन एवं ८० वर्ष मुनि पर्याय का पालन किया। आप ४९ वर्ष मुनि के रूप में, १५ वर्ष युवाचार्य के रूप में तथा १६ वर्ष तीन मास आचार्य के रूप में रहे। इस अवधि में एक वर्ष तक वे आपदाभिषिक्त आचार्य के रूप में रहे।
- आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने महान दार्शनिक और मौलिक साहित्यकार के रूप में अपनी पहचान बनाई। उन्हें 'जैन न्याय का राधाकृष्णन', आचार्य सिद्धसेन और विवेकानन्द की संज्ञा दी गई।
- आचार्य महाप्रज्ञ ने 'अणुव्रत की दार्शनिक पृष्ठभूमि' लिखी। अपने शासनकाल में अणुव्रत आन्दोलन को बहुत व्यापक और प्रभावी बनाने का प्रयत्न किया। जीवन के अन्तिम दिनों में भी उन्होंने अणुव्रत कार्यकर्ताओं को इस विषय पर मार्मिक मार्गदर्शन प्रदान किया।
- आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने प्रायः विस्मृत जैन साधना पद्धति का अनुसंधान कर पूज्य गुरुदेवश्री तुलसी के शासनकाल में 'प्रेक्षाध्यान' पद्धति का प्रवर्तन किया। आचार्य तुलसी ने आपके अवदान का मूल्यांकन करते हुए आपको 'जैन योग पुनरुद्धारक' के संबोधन से संबोधित किया। आपको इस उपलब्धि के लिए 'जैन ध्यान योग का कोलम्बस' भी कहा गया।
- जीवनविज्ञान की परिकल्पना शिक्षा के क्षेत्र में एक अभिनव प्रकल्प है। इसे शिक्षाशास्त्रियों ने शिक्षा से जुड़ी समस्याओं के समाधान के रूप में स्वीकार किया। अनेक राज्यों के विद्यालयों में जीवनविज्ञान पाठ्यक्रम की मांग हुई।
- आचार्य महाप्रज्ञ के नेतृत्व में आचार्य तुलसी के शासनकाल के पचास वर्ष की संपन्नता पर 'अमृत महोत्सव' मनाया गया। ७५वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आयोजित 'योगक्षेम वर्ष' के आयोजन के सूत्रधार भी आप ही थे।
- आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अपने जीवन के नौवें दशक में सात वर्षीय अहिंसा यात्रा कर अहिंसक चेतना के जागरण और नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा का महान अभिक्रम किया। इस यात्रा से उनके व्यक्तित्व का अभिनव रूप सामने आया।
- सर्व धर्म एवं जाति के लोगों ने अहिंसा यात्रा का स्वागत किया। इस यात्रा में साम्प्रदायिक सद्भाव का विलक्षण कार्य हुआ।
- आचार्य महाप्रज्ञ की सन्निधि में तत्कालीन राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने अपना जन्मदिन मनाया। इस अवसर पर 'सूरत अध्यात्म घोषणा पत्र' जारी हुआ। उस पर विभिन्न धर्मों के प्रबुद्ध धर्मगुरुओं

तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने अपने हस्ताक्षर किए। फ्यूरेक का गठन भी इसी कार्य को आगे बढ़ाने के लिए हुआ।

- आचार्यवर ने अहिंसा यात्रा के दौरान अहिंसा प्रशिक्षण का नया आयाम प्रस्तुत किया। उसके चार अंग निर्धारित किए १. अहिंसा सिद्धान्त और इतिहास, २. हृदय परिवर्तन, ३. अहिंसक जीवनशैली, ४. सम्यक आजीविका एवं आजीविका प्रशिक्षण।
- आचार्यवर ने इस यात्रा के दौरान देश की समस्याओं का अध्ययन एवं गहन विश्लेषण किया। स्वस्थ व्यक्ति, स्वस्थ अर्थव्यवस्था का सूत्र प्रदान करते हुए सापेक्ष अर्थशास्त्र की अवधारणा के विकसित करने की अभिप्रेरणा दी। इस दृष्टि से आचार्यवर की सन्निधि में अनेक बार चिंतन-मंथन हुआ और सापेक्ष अर्थशास्त्र का एक नया प्रारूप सामने आया। आचार्यवर ने अपने जीवन के अन्तिम दिन सापेक्ष अर्थशास्त्र के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए मार्गदर्शन दिया।
- आचार्यवर के सान्निध्य में अहिंसा विश्व शान्ति एवं सापेक्ष अर्थशास्त्र आदि विषयों पर अनेक अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार हुए।
- आचार्यश्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में अन्तर्धार्मिक परिसंवाद के अनेक गरिमामय कार्यक्रम हुए। अंतिम अन्तर्धार्मिक परिसंवाद सूफीज्म एवं जैनिज्म पर श्रीडूंगरगढ़ में हुआ।
- इन तीन वर्षों में पूज्यवर ने तेरापंथ के बुद्धिजीवी लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम इसी की एक फलश्रुति है।
- आचार्यश्री महाप्रज्ञ का एक अवदान है विकास महोत्सव। आचार्य तुलसी द्वारा अपना पट्टोत्सव न मनाने की घोषणा करने पर आचार्य महाप्रज्ञ ने उसे 'विकास महोत्सव' का रूप दिया और आचार्य तुलसी पट्टोत्सव पर्व विकास महोत्सव के रूप में प्रतिवर्ष मनाया जाने लगा। आचार्यवर ने विकास महोत्सव का विस्तृत प्रारूप प्रस्तुत किया। विकास परिषद का गठन भी इसी विकास महोत्सव की निष्पत्ति है।
- आचार्यश्री महाप्रज्ञ का एक कालजयी कार्य है आगम संपादन। आचार्य तुलसी के वाचनाप्रमुखत्व में जैन आगमों का संपादन कर आचार्य महाप्रज्ञ ने जैन शासन की अतुलनीय सेवा की, श्रुत की विलक्षण समुपासना की। महाप्रयाण के दिन भी आचार्यवर ने आगम संपादन के कार्य को लेकर अपनी प्रसन्नता को अभिव्यक्ति दी। आचार्यवर इन दिनों भगवई के पचीसवें शतक एवं निशीथ सूत्र का भाष्य लिख रहे थे।
- आचार्यवर के जीवन की एक महनीय उपलब्धि है अध्यात्म और विज्ञान का समन्वय। उन्होंने विज्ञान को अध्यात्म और अध्यात्म को वैज्ञानिक दृष्टि से देखा। उनका साहित्य अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय का जीवंत निदर्शन बन गया।
- आचार्यवर के साहित्य की अजस्र धारा प्रवाहित हुई। उनके तीन सौ से अधिक ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। पचास से अधिक ग्रंथ अभी अप्रकाशित हैं। उनके साहित्य ने जैन, जैनेतर प्रबुद्ध समाज को सर्वाधिक प्रभावित किया।
- आचार्यवर को तेरापंथ के प्रथम एकान्हिक शतक, प्रथम हिन्दी पुस्तक का लेखक होने का गौरव प्राप्त है।
- बीसवीं शताब्दी में संस्कृत और प्राकृत दोनों में एक साथ आशु वक्तव्य, संस्कृत में आशुकवित्व की सिद्धि महाप्रज्ञ को प्राप्त थी। उन्होंने संस्कृत के जटिल छंदों और दुरूह विषयों पर आशुकवित्व कर विद्वद्‌जगत को विस्मित कर दिया।
- आचार्य महाप्रज्ञ ने गुरुदेवश्री तुलसी के इंगित के अनुसार हिन्दी में 'ऋषभायण' महाकाव्य की रचना की।

- आचार्यवर ने 'आचारांग भाष्य' लिखकर भाष्यकारों की विच्छिन्न परंपरा को अविच्छिन्न बनाया। जैन शासन के इतिहास में आचारांग पर भाष्य लिखने वाले वे प्रथम व्यक्ति हैं।
- आचार्यवर ने अहिंसा व विश्वशान्ति के क्षेत्र में काम करने वाले व्यक्तियों और संस्थाओं में समन्वय की दृष्टि से 'अहिंसा समवाय' मंच की कल्पना की। इसमें अहिंसक शक्तियों को एक मंच पर इकट्ठे होकर एक-दूसरे के कार्यों को समझने और नवीन चिंतन के साथ उसे आगे बढ़ाने की दिशा मिली।
- आचार्य महाप्रज्ञ को तेरापंथ धर्मसंघ में सर्वाधिक उम्र वाले युवाचार्य एवं आचार्य बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन्होंने तेरापंथ धर्मसंघ के साधु समुदाय में सर्वाधिक संयम पर्याय वाले मुनि का स्थान आरक्षित किया। तेरापंथ का कोई भी आचार्य अपने जीवन में नौ के अंक का स्पर्श नहीं कर पाया। आचार्यवर ने अत्यन्त स्वस्थमना अपना ९०वां जन्मदिन मनाया।
- जीवन के ८३वें वर्ष में आचार्य महाप्रज्ञ सर्वाधिक उम्र वाले आचार्य बने। इस उपलक्ष्य में आयोजित 'कालजयी महर्षि अभिवंदना समारोह' के अवसर पर आचार्यवर की ८३ कृतियों का एक साथ लोकार्पण हुआ। किसी लेखक की एक साथ इतनी कृतियों के पुनः प्रकाशन एवं लोकार्पण का यह संभवतः पहला प्रसंग है।
- आचार्यवर के कार्यों, अवदानों एवं उपलब्धियों का व्यापक मूल्यांकन हुआ। आचार्यवर ने सन् १९७८ में आपको 'महाप्रज्ञ' अलंकरण से अलंकृत किया।
- इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार, राष्ट्रीय साम्प्रदायिक सद्भाव पुरस्कार तथा धर्म चक्रवर्ती आदि सम्मान मूल्यांकन के स्वयंभू प्रमाण हैं।
- टोहाना मर्यादा महोत्सव (२३ जनवरी १९९९) पर श्रद्धेय युवाचार्यश्री महाश्रमण ने आचार्य महाप्रज्ञ के सर्वतोन्मुखी योगदान का उल्लेख करते हुए समग्र धर्मसंघ की ओर से 'युगप्रधान आचार्य' के रूप में संबोधित किया। नई दिल्ली में युवाचार्य महाश्रमण के मार्गदर्शन एवं निर्देशन में आपका युगप्रधान पद पर विधिवत अभिषेक किया गया।
- आचार्यश्री महाप्रज्ञ का आचार्य तुलसी के साथ गहरा तादात्म्य रहा। आचार्य तुलसी उनके हर कार्यों के साक्षी, प्रेरक और द्रष्टा रहे। आचार्य महाप्रज्ञ ने आचार्य तुलसी से भिन्न अपने व्यक्तित्व की कभी कल्पना भी नहीं की। आचार्य तुलसी का महाप्रयाण आपके जीवन का सर्वाधिक असह्य क्षण था।
- आपने आचार्य तुलसी की विद्यमानता में ही अपने उत्तराधिकारी का नाम निश्चित कर लिया। उन्होंने वह उत्तराधिकार पत्र आचार्य तुलसी को समर्पित कर दिया, किन्तु आचार्य तुलसी की विद्यमानता में अपने उत्तराधिकारी की नियुक्ति नहीं कर पाए।
- आचार्यवर ने गंगाशहर चातुर्मास में भाद्रव शुक्ला द्वादशी, वि.सं. २०५४ में एक लाख से अधिक जनता की उपस्थिति में युवाचार्य महाश्रमण को अपना उत्तराधिकारी मनोनीत कर धर्मसंघ को निश्चिंत बना दिया। वे अपने उत्तराधिकारी को प्रतिष्ठित करने और सब दृष्टियों से समर्थ बनाने में सदा प्रयत्नशील और जागरूक रहे।
- आचार्यवर ने इन वर्षों में अपनी आत्मकथा लिखी। उसका एक बार पुनरावलोकन कर उसे अन्तिम रूप भी दे दिया। काश! अपनी आत्मकथा का वे अपने हाथों से लोकार्पण भी कर पाते। पर यह नियति को मान्य नहीं था।
- आचार्यश्री महाप्रज्ञ सुजानगढ़ में आचार्य घोषित हुए। तब से उनके महाप्रयाण तक अर्थात सोलह वर्षों में ९८ संत, १४४ साध्वियां, ३ समण एवं ९९ समणियां दीक्षित हुईं।
- उनके महाप्रयाण के समय धर्मसंघ में आचार्य महाश्रमण सहित १५५ संत, महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा सहित ५१७ साध्वियां, २ समण एवं १०५ समणियां साधनारत हैं।
- आचार्यश्री महाप्रज्ञ महाप्रयाण स्थल सरदारशहर में गुरुदेव की सन्निधि में अन्तिम समय में आचार्य महाश्रमण सहित ५६ संत, साध्वीप्रमुखाश्रीजी सहित ६५ साध्वियां एवं १० समणियां उपस्थित रहीं।

महाप्रयाण यात्रा : कुछ उल्लेखनीय तथ्य

- परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाप्रज्ञ की महाप्रयाण यात्रा सरदारशहर के इतिहास की विलक्षण घटना है। सरदारशहर प्रथम शहर है, जहां तेरापंथ के दो आचार्यों ने महाप्रयाण किया।
- आचार्य महाप्रज्ञ की अन्तिम महाप्रयाण यात्रा में देश के सभी प्रान्तों और सैकड़ों-सैकड़ों क्षेत्रों के लोग उपस्थित हुए। स्वर्गवास का समाचार मिलते ही जिसे जो साधन मिला, वह उसी से सरदारशहर के लिए प्रस्थित हो गया।
- चेन्नई, मुम्बई, कोलकाता आदि शहरों की सभी एयरलाइंस की सारी सीटें कुछ ही समय में बुक हो गईं। इन शहरों के सैकड़ों लोग चार्टर्ड प्लेनों से आए। अनेक लोगों को बहुत प्रयत्न करने पर भी चार्टर्ड विमान नहीं मिल पाए।
- १० मई को सरदारशहर के भीतर और बाहर केवल वाहन और जनता ही दिखाई दे रही थी।
- ज्ञात सूत्रों के अनुसार लगभग दो हजार बसों और दस हजार से अधिक कारों की कतारें थी। पूरा ताल मैदान बसों से खचाखच भरा था।
- महाप्रयाण यात्रा के समय चार किमी. का यात्रा पथ जनाकीर्ण था। चारों ओर नरमुंड ही दिखाई दे रहे थे। महाप्रयाण यात्रा के समय हेलीकॉप्टर से चांदी के सिक्के बरसाए गए। यह उपक्रम श्री रघुवीर जैन मार्बल परिवार वालों की ओर से किया गया।
- सरदारशहर के सभी वर्ग के लोगों ने इस अवसर पर जिस उदारता, सद्भावना और आतिथ्य भाव का परिचय दिया, वह अविस्मरणीय है।
- सभी समाज के लोगों ने अपनी दुकानों और मकानो के सामने जल, शिकंजी, शीतल पेय तथा विभिन्न प्रकार के खाद्य पदार्थ आगंतुक यात्रियों के लिए सजा रखे थे। अत्यन्त मनुहार के साथ उन्होंने अतिथियों का सत्कार कर धन्यता का अनुभव किया।
- मुस्लिम भाइयों ने भी इस अवसर पर बहुत आतिथ्य सत्कार किया। वे टेम्पुओं में खाद्य सामग्री भर कर लाए। बसों एवं कारों के ड्राइवरों को बड़े आदर के साथ भोजन कराया।
- जहां देखें वहीं यह स्थिति रही कि सरदारशहर का हर निवासी आगंतुक यात्रियों की सेवा के लिए तत्पर नजर आया।
- न केवल सरदारशहर के लोगों ने, अपितु श्रीगंगानगर, जयपुर आदि क्षेत्रों के लोगों ने भी यात्रियों की सुविधा के लिए भोजन-पानी आदि की व्यवस्था की। श्रीगंगानगर और जयपुर के तेयुप, महिला मंडल, किशोरमंडल और सभा के कार्यकर्ता खाद्य सामग्री और फिल्टर पानी की बोतलें मीनी ट्रक में भरकर लाए। अन्त्येष्टि स्थल के निकट कड़ी धूप से बचने के लिए टेन्ट लगवाए।
- सनातन परंपरा के लोगों ने अपनी मान्यता का उल्लेख करते हुए कहा ‘पुरुषोत्तम मास में एकादशी के दिन जिस समय आचार्य महाप्रज्ञ का महाप्रयाण हुआ, वह योग दुर्लभ है। किसी महापुरुष का ही इस मास के इस दिन और इस समय निर्वाण होता है। इस समय महाप्रयाण करने वाले व्यक्ति के लिए मोक्ष के दरवाजे खुले रहते हैं। उसकी मोक्ष के सिवाय और कोई गति नहीं है। सनातन धर्म की इस मान्यता ने भी नगर में अपूर्व वातावरण का निर्माण कर दिया।
- श्रीसमवसरण में जनता की इतनी भीड़ थी और वेग इतना था कि बैकुंठी को मुख्य द्वार तक पहुंचने में बहुत समय लगा। बहुत मुश्किल से प्रशासन और व्यवस्थापक पथ बना पाए।
- पूज्यवर के पार्थिव देह के परिपार्श्व में प्रायः अखण्ड जप चला।
- जहां लाखों लोगों ने पार्थिव देह के दर्शन कर आत्मतोष का अनुभव किया, वहां सैकड़ों-सैकड़ों लोग वंचित भी रह गए। उनकी व्यथा अवर्णनीय थी।

- आचार्यवर को श्रद्धांजलि समर्पित करने के लिए पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जयपुर से कार द्वारा आए। कांग्रेस, भाजपा आदि दलों के प्रमुख नेता भी सरदारशहर पहुंचे।
- जिलाधीश के.के. पाठक, पुलिस अधीक्षक सहित समग्र जिला प्रशासन ने इस अवसर पर बहुत सुन्दर और प्रशंसनीय व्यवस्थाएं कीं। जिलाधीश श्री पाठक और पुलिस अधीक्षक ने सारी व्यवस्थाएं स्वयं की देखरेख में की। प्रशासन का सहयोग उल्लेखनीय रहा।
- महाप्रयाण यात्रा के लिए बैकुंठी का निर्माण श्री पूनमचन्दजी लूणिया एवं जतनमल सेठिया के मार्गदर्शन में हुआ। इस कार्य में श्री मनीष पटावरी, राजकरण बरड़िया, मंगलचन्दजी दूगड़, संपतमल सेठिया आदि का योग रहा।
- बैकुंठी का निर्माण मोहनलाल कमलकुमार गोठी के घर पर रुकमानंद खाती (सुपुत्र-दुर्गारामजी) एवं श्री बच्छराज दर्जी सहित १६ खाती और ७ दर्जी लगे, जिन्होंने सोलह घंटों में बैकुंठी का निर्माण किया।
- इकसठ खंडी बैकुंठी की लंबाई नौ फीट, चौड़ाई चार फीट और ऊंचाई सात फीट थी। चीड़ की बांस, ईश व प्लाई से बनी इस बैकुंठी में साढ़े छत्तीस मीटर साटन का कपड़ा लगा। इसमें इकसठ चांदी के कलश लगे हुए थे। कलश बनाने वालों ने अपना पारिश्रमिक नहीं लिया।
- बैकुंठी में प्रयुक्त केसर शासनसेवी श्री जब्बरमलजी दूगड़ एवं जतनजी सेठिया के घर से आई। पार्थिव देह पर ओढ़ाई गई शॉल श्री जब्बरमलजी दूगड़ ने भेंट की।
- दाह संस्कार के लिए ८२ किलो चंदन की लकड़ी शासनसेवी श्री जब्बरमलजी दूगड़ ने उपहृत की। १५ किलो चंदन की लकड़ी समाज के अनेक व्यक्तियों ने दी। खेजड़ी की लकड़ी मोहनलाल कमलकुमार गोठी ने दी। ग्यारह पींपा घी, ग्यारह बोरी नारियल (लगभग ग्यारह क्विंटल), सात किलो खोपरा तथा ग्यारह किलोग्राम अन्य सामग्री का उपयोग हुआ।
- आचार्यवर की पार्थिव देह को सायं ६.३५ पर मुखाग्नि दी गई।
- रात्रि में लगभग सवा नौ बजे पार्थिव देह से लगभग सात मिनट तक इन्द्रधनुष के आकार में तरल पदार्थ की धारा बही। यह धार कई मीटर ऊंची थी। सैकड़ों लोगों ने इसे देखा। अनेक लोगों ने इसे अमृत मान कर ग्रहण किया। अमृत धार का वर्षण सबके लिए आश्चर्य एवं कुतूहल का विषय बन गया।
- पार्थिव देह के अन्तिम संस्कार से पूर्व प्रशासन द्वारा परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाप्रज्ञ के सम्मान में पुलिस द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया और मातमी धुन बजाई गई। भारत की स्वतंत्रता के पश्चात तेरापंथ के किसी आचार्य के महाप्रयाण के अवसर पर इस प्रकार के राजकीय सम्मान का यह प्रथम प्रसंग है।
- आचार्यश्री महाप्रज्ञ समाधि स्थल के लिए श्री मूलचन्द विकासकुमार मालू ने १८ बीघा एवं बच्छावत परिवार ने ९ बीघा भूमि देने के साथ परिपार्श्ववर्ती नौ बीघा भूमि भी क्रय करके देने की घोषणा की गई।
- आचार्यश्री महाप्रज्ञ समाधि स्थल के निर्माण, विकास एवं उससे संबंधित अन्य दायित्व श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के रहेंगे यह भी निर्णीत हो चुका है।

स्वर श्रद्धांजलि के

'तेरापंथ धर्मसंघ के परम अनुशस्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने दीर्घकाल तक संयम का पालन कर शासन की सेवा द्वारा कर्मों की निर्जरा की, वह अनुमोदनीय है। ऐसे महान संत के देवलोक गमन से संपूर्ण जैन समाज को अपूरणीय क्षति हुई है। उनके आदर्शों पर चलना ही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

आचार्य शिव मुनि

'युगपुरुष अध्यात्म के शिखर पुरुष परमाराध्य आचार्य महाप्रज्ञ के कालधर्म के समाचार सुनकर भारी हृदयाघात की संवेदना हुई। नौ दशक का दीर्घायुष्य, करीब आठ दशक की विरति पर्याय, आजीवन विद्याअर्थी, ज्ञानअर्थी, ज्ञान प्रदात्री गंगोत्री, चलता-फिरता विश्वविद्यालय, सभी उपाधियां और डिग्रियां जिनके बाह्याभ्यन्तर व्यक्तित्व एवं कृतित्व के सामने वमन हैं, ऐसे युग दिवारक का सूर्यास्त न केवल तेरापंथ अथवा जैन शासन के लिए, मैं कहूंगा पूरी मानव जाति के लिए अपूरणीय क्षति है। शताब्दियों के पश्चात ऐसे महापुरुष भूमण्डल पर आते हैं, अमिट पदचिह्न छोड़ जाते हैं। युगों तक मानव जाति उन पदचिन्हों का अनुसरण करती है।

पूज्यवर आचार्यश्री का जीवन कर्तृत्व केवल एक शोध प्रबन्ध का नहीं, दशों शोध प्रबन्ध का विषय है।

भास्कर मुनि, अजरामर सम्प्रदाय

'इस महाबट वृक्ष का अचानक उखड़ जाना संपूर्ण समाज के लिए बेहद निराशाजनक घटना है, दुःखद प्रसंग है। आचार्यश्री जैन जगत की पहचान थे। उनका कार्य सर्वकल्याणकारी था। उनकी मिलनसारिता ने सामाजिक अलगाव और दुराव को समाप्त कर दिया था। हम जब-जब आचार्यश्री महाप्रज्ञ से मिले, तब-तब भरपूर वात्सल्य, स्नेह और अपनापन मिला। उनके स्नेहिल आशीर्वाद को हम भुला नहीं सकते। अपनी सद्भावना और व्यवहारपूर्ण आचरण से सामाजिक दूरियों को मिटाने वाले युगपुरुष, योग विज्ञान के महान वैज्ञानिक, अध्यात्म की जीती-जागती मिसाल आचार्य महाप्रज्ञ का अभाव सबको खलता रहेगा। यह एक ऐसी क्षति है, जिसकी पूर्ति असंभव है। पर क्या किया जा सकता है। उनके आदर्शों को, उनकी महानता को, उनकी मिलनसारिता को हम सब अपने आचरण से जीवित रख सकें, यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

डॉ. विशाल मुनि

काफी वर्षो के बाद जिन शासन में ऐसे महान विद्वान, सरस्वतीपुत्र, जिन्होंने समग्र जाति और पंथ को धर्म का मर्म वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझाने का सफल पुरुषार्थ किया। आचार्य महाप्रज्ञ के जाने से समग्र जैन शासन और भारत राष्ट्र को बहुत बड़ी क्षति पहुंची है।

गणिवर्य नयपद्मसागर

आचार्यश्री महाप्रज्ञ निश्चित ही वर्तमान के विद्वान और बहुश्रुत आचार्य थे। इतनी दीर्घ उम्र में भी उनमें जो अदम्य साहस, दृढ़ मनोबल और जागरूकता थी, वह अनुमोदनीय थी। जिन शासन के प्रति उनका समर्पण, सजगता और सक्रियता अनुकरणीय थी।

मेरा उनसे दो बार प्रत्यक्ष मिलन हुआ। उनकी सरलता आज भी मेरे भीतर सुरक्षित है। उनके द्वारा रचित साहित्य का अवलोकन कर उनकी ज्ञान समृद्धि का भी अहसास हुआ।

तेरापंथ धर्मसंघ का सफल संचालन आचार्यश्री ने पूर्ण अनुशासन से किया। भविष्य के सुसंचालन का तत्त्व भी युवाचार्यश्री महाश्रमण को समर्पित कर गए, यह उनकी दूरदर्शिता का दर्शन है।

आचार्य जयंतसेन सूरि

'आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने पूरे देश में पदयात्रा के द्वारा तेरापंथ के चिन्तन एवं अहिंसा का प्रचार-प्रसार किया। जनता के कल्याण के लिए अणुव्रत आन्दोलन और प्रेक्षाध्यान का प्रसार किसी जाति और धर्म तक सीमित न रखकर पूरी मानव जाति के लिए किया। उन्होंने सैकड़ों धार्मिक ग्रंथों का निर्माण किया। समाज में व्याप्त कुरीतियों को मिटाने के लिए प्रयास किया।

जगद्गुरु श्री बालगंगाधर नाथ स्वामीजी, आदि चुनचुनगिरि मठ

'पूज्य महाप्रज्ञजी के देहान्त से अहिंसा के सन्देश को जन-जन तक पहुंचाने वाले अहिंसा के एक महान दूत की कमी सदा के लिए महसूस होती रहेगी। पूज्यश्री महाप्रज्ञजी एक महान संत के रूप में अनेक लोगों के हृदय में आसीन थे। विनम्रता, उदारता, करुणा, धैर्य, मैत्री आदि सद्गुणों से आचार्यश्री का संतत्व आलोकित था। आध्यात्मिकता के आदर्शों को अपने जीवन में साकार करके अनेकों के जीवन में साकार करने के लिए उन्होंने अपना जीवन समर्पित किया था। एक चिन्तक एवं फिलॉसफर के रूप में उन्होंने जीवनविज्ञान एवं प्रेक्षाध्यान से लेकर कई सामाजिक समस्याओं पर अपना मौलिक चिंतन दिया था। अनेकों पुस्तकों, व्याख्यानों

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/09-11 Fri.-Sat.
L.No.-U(C) 200/2009-2011
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

एवं जैन विश्वभारती इंस्टीट्यूट जैसे शिक्षा संस्थानों के द्वारा जैनदर्शन, अणुव्रत, परंपरा एवं सांस्कृतिक विचारों को विदेशों के विद्वानों से लेकर भारत की आम जनता तक पहुंचाया है। पूज्यश्री महाप्रज्ञजी ने अपने जीवन के ९० वर्षों तक जैन तेरापंथ परंपरा की धुरा का वहन करते हुए राष्ट्र को कई ऐसे अवदान दिए हैं, जो आने वाले अनेक वर्षों तक राष्ट्र के उत्कर्ष में योगदान देते रहेंगे।

अक्टूबर २००५ में दिल्ली में स्वामिनारायण अक्षरधाम के उद्घाटन महोत्सव के अवसर पर उपस्थित रहकर पूज्य महाप्रज्ञजी ने हमारे साथ मैत्री का एक सेतु बांध लिया था। ऐसे महान संत के देहविलय से अत्यन्त खेद हुआ है। भगवान श्री स्वामिनारायण के चरणों में प्रार्थना करते हुए मैं आचार्यश्री महाप्रज्ञ के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

शास्त्री नारायणस्वरूपदास (प्रमुख स्वामी महाराज, स्वामिनारायण अक्षरधाम)

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

५१११/ स्व. श्रीमती मोहनदेवी ढीलीवाल (धर्मपत्नी-श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. श्री गोविन्दसिंहजी ढीलीवाल, चित्तौड़गढ़) को पूज्यवर द्वारा अन्तिम बार 'श्रद्धा की प्रतिमूर्ति' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र व पुत्रबधू राजेश-सुशीला, कीर्ति-छाया, अजित-स्नेहा, संजय-प्रीति, सुपौत्र हर्षिल, आदित्य, पुनीत व श्रेयान ढीलीवाल द्वारा प्रदत्त।

३१००/- तेरापंथ के ११वें सूर्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के आचार्य पदारोहण के उपलक्ष्य में श्री इन्द्रचन्द-शान्तिदेवी, सुशील-सुमित्रा एवं नवनीत-सुनीता सेठिया, बगड़ीनगर (राज.) एवं कुंभकोणम (चेन्नई) द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री मिन्नालालजी बरड़िया (सुपुत्र-स्व. बनेचन्दजी बरड़िया, नोहर) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र विनोदकुमार, दिलीपकुमार बरड़िया, कोलकाता द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रीमती चांदतारी जैन (धर्मपत्नी-स्व. श्री प्यारेलालजी जैन, छातर-जगराओं) को 'तपोनिष्ठ श्राविका' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र रोशनलाल, दिलबाग, सज्जन, रामचन्द्र, सुपौत्र राजेन्द्र, सतीश, चन्द्रकान्त एवं प्रपौत्र सक्षम, नितेश जैन द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रीमती जसवंतीदेवी जैन (धर्मपत्नी-श्री तिलकराज जैन, पाटनी) को 'तपोनिष्ठ श्राविका' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र पवनकुमार, अभयकुमार, जनकराज, गुणपाल, सुपौत्र राजकुमार, विवेक, विशाल, अरिहंत, गौरव एवं विकास जैन द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्वर्गीय विजयसिंह सुराना (सुपुत्र-स्व. श्री मोहनलालजी सुराना, राजगढ़) को 'श्रद्धानिष्ठ श्रावक' संबोधन प्राप्त होने के उपलक्ष्य में उनके सुपुत्र राकेश, संजय सुराना, काकीनाड़ा (आन्ध्र प्रदेश) द्वारा प्रदत्त।

मुनि मिलापचन्दजी का स्वर्गवास

वयोवृद्ध मुनिश्री मिलापचन्दजी का बोरावड़ में २० मई को १.१४ पर स्वर्गवास हो गया है। उनके संदर्भ में आचार्यवर के उद्गार पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में।

पत्र व्यवहार के लिए हमारा पता है–

कमलेश चतुर्वेदी, प्रबन्धक : आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, पो. सरदारशहर-३३१४०३, जि. चूरू (राजस्थान) फोन : ०९६८००५५३८१, ०९३५२४०४६४१, दिल्ली कार्यालय का फोन ०११-२३२३४६४१
नोरतनमल दूगड़ (अध्यक्ष) फोन : ९२१४५१२३४६, बच्छराज कठोतिया (मंत्री) फोन : ९३११२३४६४१

•

आदर्श साहित्य संघ, २१०, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ के लिए बच्छराज कठोतिया ट्रस्टी द्वारा प्रकाशित तथा पवन प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२ से मुद्रित। सम्पादक : **कमलेश चतुर्वेदी।**